Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

वेदों में वन संरक्षण और लोक में उसकी उपस्थिति

सुभाष चंद सैनी [1*], प्रो. डॉ. अशोक भार्गव [2]

[1] शोधार्थी, मौलाना आजाद यूनिवर्सिटी जोधपुर, राजस्थान, भारत

[2] शिक्षा विभाग, मौलाना आज़ाद यूनिवर्सिटी, जोधपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * सुभाष चंद सैनी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.22090963

सार

भारतीय संस्कृति में पेड़–पौधों को पूजनीय माना जाता हैं। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर थार के मरुस्थल पर्यंत पेड़ पौधों की किसी न किसी रूप में पूजा होती आई हैं। केला, वट, पीपल, आंवला, तुलसी, बिल्व, नीम आदि इसके अनुकरणीय उदाहरण हैं। हमारे देश में ऋषि मुनि ज्यादातर जंगलों में स्थापित आश्रमों और गुरुकुलों में निवास करते थे तथा पेड़ पौधों और हरियाली की वृद्धि एवं सुरक्षा करते थे। आज भी हिंदू धर्म की विशेषता हैं कि यहां मंदिरों में पेड़ पौधे लगाए जाते हैं तथा वर्ष भर उनकी रक्षा व पूजा की जाती हैं। मनुष्य व पेड़–पौधों का जीवन अति घनिष्ठता से जुड़ा हुआ हैं। हिंदू धर्म में वनों को अरण्य कहते हैं और इसके देवता को अरण्यानी देवी कहते हैं। वन देवता और प्रकृति से जुड़े आवास को लोक भाषा में ओरण कहा जाता हैं। इसके विषय में शोधपत्र में शेष विषेष वर्णन किया जाएगा।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-07-2026
- **Accepted:** 20-08-2026
- **Published:** 25-08-2026
- **MRR:**4(8); 2026: 253-255
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सैनी सु. चं. भार्गव. अ. वेदों में वन संरक्षण और लोक में उसकी उपस्थिति Indian J Mod Res Rev. 2026;4(8):253-255.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: अरण्य, अरण्यनी, ओरण, वेद, वनस्पति आदि

© 2026 सुभाष चंद सैनी. प्रो. डॉ. अशोक भार्गव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में पेड़ पौधों को पूजनीय माना जाता है। हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों से लेकर थार के मरुस्थल पर्यंत पेड़ पौधों की किसी न किसी रूप में पूजा होती आई है। केला, वट, पीपल, ऑवाला, तुलसी, बिल्व, नीम आदि इसके अनुकरणीय उदाहरण है। हमारे देश में ऋषि मुनि ज्यादातर जंगलों में स्थापित आश्रमों और गुरुकुलों में निवास करते थे तथा पेड़ पौधों और हरियाली की वृद्धि एवं सुरक्षा करते थे। आज भी हिंदू धर्म की विशेषता है कि यहां मंदिरों में पेड़ पौधे लगाए जाते हैं तथा वर्ष भर उनकी रक्षा व पूजा की जाती है। मनुष्य व पेड़ पौधों का जीवन अति घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है। संभवत इस कारण ही वृक्षों को पूजनीय समझ गया है। आज भी बहुमूल्य औषधि दुर्लभ पादप इन वनों में ही मिलते हैं। सभी वृक्षों और वनस्पतियों से मानव की आकांक्षाओं को जोड़ते हुए वैदिक काल में ऋषियों ने पेड़ पौधों में देवता की प्रतिष्ठा कर अपनी वैज्ञानिक धारणा का परिचय दिया तथा उसे धर्म कर्म से संबद्ध कर वनस्पतियों और वृक्षों को सुरक्षा प्रदान की है। हिंदू धर्म में वनों को अरण्य कहते हैं और इसके देवता को अरण्यानी देवी कहते है। वन देवता और प्रकृति से जुड़े आवास को लोक भाषा में ओरण कहा जाता है।

हिंदू धर्म में, अरण्यानी, वनों और उनमें रहने वाले जंगली जानवरों की देवी हैं।[1], ऋग्वेद में अरण्यनी को समर्पित एक बहुत ही विस्तृत और सुंदर स्तुति (सूक्त) है। अरण्यनी सूक्त[2], में उन्हें ऐसी देवी के रूप में बताया गया है जो आसानी से दिखाई नहीं देतीं, जिन्हें जंगल में शांत और खुली जगह पसंद हैं और जो सुनसान जगहों पर भी बिना डरे घूमती हैं। कभी–कभी उन्हें कल्पवृक्ष (दिव्य वृक्ष) की स्वामिनी भी माना जाता है। इस सूक्त में, प्रार्थना करने वाला उनसे पूछता है कि वे इंसानी बस्तियों से इतनी दूर बिना डरे या अकेला महसूस किए कैसे घूमती रहती हैं। वे घुंघरू वाली पायल पहनती हैं; भले ही वे कम ही दिखाई देती हों, लेकिन उनकी पायल की खनक से उनके होने का पता चल जाता है।[3], उन्हें एक नृत्यांगना (डांसर) के रूप में भी बताया गया है। प्रार्थना करने वाले को उनकी यह खूबी सबसे अद्भुत लगती है कि वे बिना खेती किए भी इंसानों और जानवरों, दोनों का पेट भरती हैं। इस सूक्त को तैत्तिरीय ब्राह्मण में भी दोहराया गया है और उस ग्रंथ के टीकाकार ने इसकी व्याख्या की है।[4],

अरण्यानी की तुलना बाद के समय की वन–देवियों से की जाती है, जैसे पश्चिम बंगाल में वनबीबी, गोवा और कोंकण क्षेत्र में वनदेवता, और दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में वनदुर्गा। आधुनिक हिंदू धर्म में उनकी पूजा कम हो गई है और अरण्यानी को समर्पित मंदिर शायद ही कहीं मिलते हैं। हालांकि मऊ में अरण्यानी देवी के नाम का एक मन्दिर है।[5] वास्तविकता ऐसी नही है क्योंकि राजस्थान के जैसलमेर में ही अनेक जागृत देवियों की अनेक ओरण आज भी विद्यमान है और उनकी पूजा तथा परिक्रमा की जाती है।

ओरण किसी लोक देवता अथवा देवी को समर्पित पवित्र वन–भूमि होती है, जहाँ वृक्षों को काटना तथा वन्यजीवों को हानि पहुँचाना पूर्णतः वर्जित होता है। राजस्थान में ओरण (अरण्य) सदियों से यहां के जन समुदाय द्वारा संरक्षित जैव विविधता के समृद्ध केंद्र रहे हैं। ये पवित्र वन वृक्षों, पशु–पक्षियों तथा भूजल सभी के लिए सुरक्षित आश्रय प्रदान करते हैं।

1. भादरिया ओरण एशिया का सबसे बड़ा भूमिगत पुस्तकालय और विशाल गौशाला विश्व में प्रसिद्ध है।
2. श्री देगराय जी ओरण गांव सांवता और रास्ला
3. श्री तेमड़ेराय जी ओरण गांव नाडिया
4. श्री नागणेची देवी ओरण, कोहा, पाबनासर, लाखा
5. श्री आशापूर्ण माता जी ओरण, देवीकोट
6. श्री कालेडुगंर राय जी, ओरण, हडडा़ व काणोद
7. श्री रामदेवजी ओरण, रामदेवरा
8. श्री देशराय जी ओरण, बांधता, रासला
9. श्री आईनाथ जी ओरण, भिवसर, दवाड़ा, मूलाना, चेलक, सिंडार, पांचा, चींचा, लक्ष्मणसर, डोगरी, सांडा, तेजमालता आदि।

उपरोक्त के अलावा 150 से अधिक ओरण जो 15 लाख बीघा में है और यहां देवी भैरव और झूझारों के नाम पर यह स्थित है। यहां ये ओरण जागृत कहलाती है और समय–समय पर अपने चमत्कार से (आम भाषा बोलचाल में पर्चा देना) चमत्कृत करती है। इन ओरण की सामूहिक परिक्रमा तथा पूजा अर्चना भी होती है।

इन ओरणो को देवी देवताओं की ओरण मानने के कारण इस क्षेत्र में दुर्लभ जीव जंतु और वनस्पतियां मिलती है। जैसे की लुप्त मान चुके जंगली बिल्ली (सियागोह) मिली है । इन ओरणों में हरी लकड़ीयां काटना तथा इन ओरणों में खेती करना, हरे पत्ते तोड़ना तक निषेध है। यह सारी बातें हमें वैदिक दिशा निर्देशों में भी मिलती है। जैसे कि–

मा काकम्बीरमुद्वहो वनस्पतिम्।[6]

कोऔ आदि पक्षियों की पुष्टि करने वाले वन आदि वृक्षों को मत काटो। सनातन वैदिक ऋषियों ने वनस्पतियों और वृक्षों को चौतन्य युक्त मानव सदृश स्वीकार किया है और उनमें देवता की उपस्थित मानकर उनके संरक्षण का कार्य किया और उपदेश दिया है । जैसे कि –

नमो वृक्षेभ्यः।[7]
वृक्षाणां पतये नमः,
औषधीनां पतये नमः,
अरण्यानां पतये नमः।[8]

[1] 1. Murphy, Patrick D.; Gifford, Terry; Yamazato, Katsunori (1998)। Literature of Nature: An International Sourcebook। Taylor & Francis। Pp. 317। ISBN 978-1-57958-010-0।

[2] ऋग्वेद के 10वें मंडल का 146वां सूक्त

[3] The Hymns of the Rigveda, Ralph T. H. Griffith, 1973। Hymn CXLVI, Pp. 640

[4] Muir, John (1870)। Original Sanskrit Texts on the Origin and History of the People of India। London: Trubner and Co.। Pp. 422।

[5] . Dalal, Roshen (2010)। The Religions of India: A Concise Guide to Nine Major Faiths। India: Penguin Books India। Pp. 28। ISBN 9780143415176।

[6] ऋग्वेद 6.48.17

[7] यजुर्वेद 16.17

© 2026 सुभाष चंद सैनी. प्रो. डॉ. अशोक भार्गव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस प्रकार वनों को पूजनीय माना गया है और उनकी पूजा में कहा गया है कि–

औषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरूपब्रवे।
सनेयमश्वं गां आत्मनं तव पुरूष।।[9]

अर्थात हे माता के समान हित करने वाली औषधि। मैं देवियों के समान सुखदायक तथा रश्मियों के सम्मान रोगनाशक रूप से तुम्हारा ज्ञान दूसरों को देता हूं। मैं (वैद्य) औषधीय को प्राप्त करने के लिए अश्व, भूमि, गौ, वस्त्र और स्वयं को भी तुम्हें प्राप्ति के लिए समर्पित करता हूं।

वृक्षों की रक्षा और सतत् प्राप्ति के लिए ऋषियों का यह है अर्पण ग्रहणीय है अतः ऐसे समर्पण की भावना सब में तभी विकसित हो सकती है जब सब लोग इन वनदि के गुणों से अवगत हो तथा इसके प्रति कृतज्ञ हो। इसलिए ऋग्वेद का ऋषि कहता है कि इसके सामर्थ को जाने क्योंकि यह अरणय (ओरण) सब की माता स्वरूपा है। इसी भाव को ऋग्वेद का ऋषि कह उठता है कि–

आञ्जनगन्धिं सुरभित बहन्नामकृषीवलाम् ।
प्राहं मृगाणां मातरमण्यानियशंसिषम् ।।[10]

देखो यह वन मार्ग अंजन वृक्षों के फूलों की सुगंध से कितना सुगंधित है। यहां बिना कृषि के प्रचुर मात्रा में अन्न उत्पन्न होता है यह पशुओं की माता है इन अरण्यो की स्तुति कौन नहीं करेगा।

इस प्रकार वेदों में वन संरक्षण और उसकी लोक में उपस्थिति प्रमाणित होती है इसे यह भी प्रमाणित होता है कि वैदिक आर्य यही लोग हैं जो वेदों में अरण्य की पूजा और लोक में ओरण की पूजा करते आए हैं। अतः आज इन ओरणो का संरक्षण किया जाना अति आवश्यक है। क्योंकि आमजन इसका संरक्षण कर रहा है लेकिन सरकारे विकास के नाम पर इन ओरणों को सोलर कंपनियों को दे रही है और वे ओरणों को समूल नष्ट कर रहे हैं। इसे बचाने के लिए हाल ही में 700 किलोमीटर की पदयात्रा जनसाधारण द्वारा की गई है, किंतु सरकारे अभी भी तानाशाही कर रही है।

संदर्भ सूची

1. Murphy, Patrick D.; Gifford, Terry; Yamazato, Katsunori (1998) । *Literature of Nature: An International Sourcebook*। Taylor & Francis। पृष्ठ 317। ISBN 978-1-57958-010-0।
2. ऋग्वेद के 10वें मंडल का 146वां सूक्त
3. *The Hymns of the Rigveda*, Ralph T. H. Griffith, 1973। Hymn CXLVI, पृष्ठ 640।
4. Muir, John (1870)। *Original Sanskrit Texts on the Origin and History of the People of India*। London: Trubner and Co.। पृष्ठ 422।
5. Dalal, Roshen (2010)। *The Religions of India: A Concise Guide to Nine Major Faiths*। India: Penguin Books India। पृष्ठ 28। ISBN 9780143415176।
6. ऋग्वेद 6-48-17
7. यजुर्वेद 16-17
8. यजुर्वेद 16-20
9. ऋग्वेद 10-97-4
10. ऋग्वेद 10-146-6

[8] यजुर्वेद 16.20
[9] ऋग्वेद 10.97.4
[10] ऋग्वेद 10.146.6

Creative Commons (CC) License
This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

सुभाष चंद सैनी एक शोधार्थी हैं, जो मौलाना आज़ाद यूनिवर्सिटी, जोधपुर, राजस्थान, भारत से संबद्ध हैं। वे शैक्षणिक अनुसंधान के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्यरत हैं तथा अपने विषय में गहन अध्ययन और लेखन में योगदान दे रहे हैं। ज्ञान की खोज और शोध कार्यों के प्रति उनकी गहरी रुचि उन्हें विद्वत समुदाय में एक उभरते हुए शोधार्थी के रूप में स्थापित करती है।

© 2026 सुभाष चंद सैनी. प्रो. डॉ. अशोक भार्गव. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/